डीकोड (DECODE) दक्षिण एशिया वेबिनार रिपोर्ट

जंगल से खाद्य पदार्थ

हिमालय की परिश्रमी महिलाएँ भारत के हिमालयी पर्वतों में पारंपरिक ज्ञान, विज्ञान और स्थिरता के बीच सेतु का कार्य कर रही हैं

अप्रैल 3, 2025

1. वेबिनार से सम्बंधित जानकारी

- **तिथि एवं समय:** 3 अप्रैल, प्रातः 11:00 बजे से अपराह्न 12:30 बजे तक (भारतीय मानक समय)
- **डीकोड परियोजना – दक्षिण एशिया क्षेत्रीय टीम:** डॉ. राजेश टंडन, डॉ. अंशुमान करोल, गौरी खन्ना

वेबिनार के वक्ता:

- **डॉ. राजेश टंडन**, संस्थापक अध्यक्ष, प्रिया; डीकोड परियोजना के सह-निदेशक एवं सामुदायिक शोध तथा उच्च शिक्षा में सामाजिक उत्तरदायित्व हेतु यूनेस्को (UNESCO)के सह-अध्यक्ष
- **शैलेश पंवार**, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (HARC), भारत
- **भावनी देवी**, सदस्य, एचएआरसी अलकनंदा कृषि व्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारी समिति (HAKVBSS), चमोली, उत्तराखंड
- **सरोजिनी देवी**, सदस्य, एचएआरसी अलकनंदा कृषि व्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारी समिति (HAKVBSS), चमोली, उत्तराखंड
- **रेखा देवी**, सदस्य, एचएआरसी अलकनंदा कृषि व्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारी समिति (HAKVBSS), चमोली, उत्तराखंड
- **गणेश उनियाल**, सचिव, एचएआरसी अलकनंदा कृषि व्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारी समिति (HAKVBSS), चमोली, उत्तराखंड
- **डॉ. द्युतिमान चौधरी**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सतत कृषि-खाद्य प्रणाली कार्यक्रम, अंतरराष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं सुधार केंद्र (CIMMYT), नेपाल (पूर्व में ICIMOD, नेपाल से संबद्ध)
- **प्रो. पाउला बनर्जी**, IDRC Endowed Research Chair on Gender and Forced Displacement, एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बैंकॉक
- **डॉ. अर्जन डी हान**, कनाडा के अंतरराष्ट्रीय विकास अनुसंधान केंद्र (IDRC) में जलवायु विशेषज्ञ
- **डॉ. महेंद्र सिंह कुंवर**, संस्थापक सदस्य एवं मुख्य सलाहकार, हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (HARC), भारत

वेबिनार संचालक: डॉ. अंशुमान करोल, लीड- गवर्नेंस एंड क्लाइमेट एक्शन , प्रिया, भारत

प्रतिभागियों की संख्या: इस अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में कुल 259 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया, जिनमें से 109 प्रतिभागी सक्रिय रूप से शामिल हुए। यह सहभागिता न केवल भारत तक सीमित रही, बल्कि दुनिया के कई देशों जैसे मेक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, पाकिस्तान, अंडोरा, बांग्लादेश, आयरलैंड, तंज़ानिया, मलेशिया, कैमरून और युगांडा से भी सहभागिता दर्ज की गई। इस प्रकार, वेबिनार ने एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका के विभिन्न

हिस्सों से जुड़ाव प्राप्त कर एक **वैश्विक संवाद मंच** का रूप लिया। प्रतिभागी विभिन्न पृष्ठभूमियों से थे—शोधकर्ता, विश्वविद्यालयों के शिक्षक, सामुदायिक संगठनों के प्रतिनिधि, विकास पेशेवर, महिला नेतृत्वकर्ता, और छात्र-शोधार्थी।

2. वेबिनार विवरण

डीकोड नॉलेज परियोजना के अंतर्गत आयोजित यह दक्षिण एशिया क्षेत्रीय वेबिनार एक प्रेरणादायी मंच के रूप में उभरा, जहाँ सहभागी अनुसंधान के अनुभव, साक्ष्य आधारित सीख और सामुदायिक स्तर पर क्रियान्वित की गई केस स्टडीज़ को साझा किया गया। यह पहल यूनेस्को चेयर (समुदाय आधारित अनुसंधान एवं उच्च शिक्षा में सामाजिक उत्तरदायित्व) के मार्गदर्शन में संचालित की जा रही है, जिसमें कनाडा स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ विक्टोरिया के सेंटर फॉर ग्लोबल स्टडीज़ तथा भारत की संस्था प्रिया (Participatory Research in Asia) प्रमुख साझेदार हैं। इस परियोजना को कनाडा के अंतरराष्ट्रीय विकास अनुसंधान केंद्र (IDRC) का वित्तीय सहयोग प्राप्त है।

वेबिनार के दौरान उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र में महिलाओं के नेतृत्व में संचालित एक अनुकरणीय पहल — **एचएआरसी अलकनंदा कृषि व्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारी समिति (HAKVBSS)** — को एक जीवंत केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह सहकारी समिति न केवल टिकाऊ आजीविकाओं का एक सशक्त उदाहरण है, बल्कि महिलाओं की नेतृत्व क्षमता, पारंपरिक ज्ञान की भूमिका, और समुदाय की सामूहिक शक्ति को भी दर्शाती है।

डीकोड परियोजना के अंतर्गत यह पहल यह दर्शाती है कि किस प्रकार पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक मूल्य और स्थानीय संसाधनों के आधार पर समुदाय जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन विकसित कर सकते हैं। साथ ही यह भी सिद्ध होता है कि जब महिलाएं नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ती है, तो सामाजिक और पर्यावरणीय सततता के लक्ष्य अधिक प्रभावशाली ढंग से प्राप्त किए जा सकते हैं।

जनवरी 2024 में आरंभ हुई यह परियोजना, पिछले 15 महीनों में समुदाय आधारित सहभागी अनुसंधान को गहराई से दस्तावेजीकृत और विश्लेषित कर रही है। इसका उद्देश्य है — ऐसे वैश्विक उदाहरणों को चिन्हित करना और साझा करना, जहाँ स्थानीय समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान के साथ जलवायु संकट का सामना कर रहे हैं और सतत विकास की दिशा में नवाचारों का निर्माण कर रहे हैं।

इस वैश्विक पहल में भारत के हिमालयी क्षेत्र की यह केस स्टडी छह महत्त्वपूर्ण उदाहरणों में से एक है — अन्य उदाहरण आर्कटिक इनुइट (कनाडा), पश्चिमी कनाडा, कोलंबिया, उत्तरी युगांडा और मलेशिया से हैं। इन अनुभवों को साझा कर, डीकोड परियोजना न केवल नीति और अभ्यास के स्तर पर संवाद को सशक्त करती है, बल्कि यह सुनिश्चित करती है कि सामुदायिक आवाज़ें वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनें और उन्हें वह सम्मान और मान्यता मिले जिसकी वे अधिकारी हैं।

3.वेबिनार एजेंडा

1. उद्घाटन और स्वागत (11:00 पूर्वाह्न) वेबिनार की शुरुआत डॉ. अंशुमान करोल (Lead- Governance & Climate Action) द्वारा स्वागत भाषण और उपयोग संबंधी दिशा-निर्देशों (Housekeeping Guidelines) के साथ हुई।
2. DECODE ज्ञान परियोजना का परिचय (11:05 पूर्वाह्न)
डॉ. राजेश टंडन, जो कि UNESCO चेयर और DECODE परियोजना के सह-प्रमुख हैं, उन्होंने परियोजना के उद्देश्यों, दृष्टिकोण और वैश्विक महत्त्व को रेखांकित किया।
3. भारतीय केस स्टडी की प्रस्तुति (11:20 पूर्वाह्न) इस खंड में चमोली, उत्तराखंड स्थित HARC संस्था और महिलाओं द्वारा संचालित सहकारी समिति HAKVBSS की अनुभवात्मक प्रस्तुति की गई। प्रस्तुतकर्ता थे:
• शैलेश पंवार (HARC)
• भावनी देवी, सरोजिनी देवी, रेखा देवी, गणेश उनियाल (HAKVBSS से) इन वक्ताओं ने जंगली उत्पादों, पारंपरिक ज्ञान, महिला सशक्तिकरण और सतत आजीविका के संबंध में अपने अनुभव साझा किए।
4. विशेषज्ञों की टिप्पणियाँ (11:45 पूर्वाह्न)
प्रस्तुति के पश्चात, निम्नलिखित विशेषज्ञों ने केस स्टडी पर अपने विचार प्रस्तुत किए:
• डॉ. द्युतिमान चौधरी (CIMMYT, नेपाल)
• प्रो. पाउला बनर्जी (AIT, थाईलैंड)
• डॉ. अर्जन डी हान (IDRC, कनाडा)

5. प्रतिभागियों के प्रश्नोत्तर (12:15 अपराह्न) इस सत्र में प्रतिभागियों के सवालों को लिया गया और वक्ताओं एवं विशेषज्ञों ने उनके उत्तर दिए।
6. समापन टिप्पणी (12:25 अपराह्न) **डॉ**. महेन्द्र सिंह कुँवर (HARC) ने समापन टिप्पणी दी और सामुदायिक ज्ञान की शक्ति एवं निरंतर सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित किया।
7. वेबिनार का समापन (12:30 अपराह्न) वेबिनार एक समावेशी और प्रेरणादायक विमर्श के साथ संपन्न हुआ, जिसमें प्रतिभागियों को सामुदायिक नेतृत्व वाले सतत विकास मॉडलों से सीखने और संवाद के लिए प्रेरित किया गया।

4. स्वागत एवं परिचय

वेबिनार की शुरुआत मॉडरेटर डॉ. अंशुमान करोल द्वारा आत्मीय स्वागत के साथ हुई। उन्होंने सत्र का वातावरण निर्धारित करते हुए वेबिनार की रूपरेखा बताई तथा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े वक्ताओं और पैनलिस्टों का परिचय कराया। साथ ही, उन्होंने एक सम्मानजनक और सुरक्षित वर्चुअल वातावरण बनाए रखने हेतु कुछ आवश्यक निर्देश (हाउसकीपिंग नियम) भी प्रतिभागियों के साथ साझा किए।

डॉ. राजेश टंडन

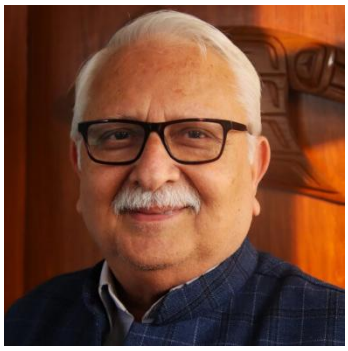

डॉ. राजेश टंडन सहभागी अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित विचारक एवं कार्यकर्ता हैं। वे प्रिया (Participatory Research in Asia) के संस्थापक-अध्यक्ष हैं, जो सहभागी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के लिए एक वैश्विक केंद्र है। वे वर्ष 2012 से यूनेस्को चेयर ऑन कम्युनिटी-बेस्ड रिसर्च एंड सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी इन हायर एजुकेशन के सह-अध्यक्ष भी हैं।

सहभागी अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी माने जाने वाले डॉ. टंडन ने अकादमिक शोध की परंपरागत धारणाओं को चुनौती देते हुए, शोधकर्ता और समुदाय के बीच के संबंधों को एक नई परिभाषा दी है। उन्होंने भारत सहित कई देशों और विश्वविद्यालयों में सहभागी अनुसंधान एवं लोकतांत्रिक शासन पर पाठ्यक्रम भी पढ़ाए हैं एवं इस विषय पर विपुल लेखन कार्य किया है।

डॉ. टंडन ने परियोजना के उद्देश्यों, दृष्टिकोण और वैश्विक महत्त्व को रेखांकित करते हुए ,अपने वक्तव्य में बताया कि डीकोड परियोजना पारंपरिक ज्ञान-निर्माण की पदानुक्रमित संरचना को चुनौती देती है और इसके स्थान पर समानता आधारित ज्ञान साझाकरण (Horizontal Knowledge Sharing) को बढ़ावा देती है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि समुदाय-नेतृत्व वाले अनुसंधान प्रयासों से एक मुक्त-स्रोत (ओपन एक्सेस) डिजिटल 'ज्ञान लोकतंत्र' मंच (Knowledge Democracy Platform) की रचना की जानी चाहिए, जहाँ डीकोड सहित दुनिया भर में किए जा रहे सामुदायिक एवं आदिवासी नेतृत्व वाले अनुसंधान कार्यों को साझा किया जा सके और वैश्विक स्तर पर उपलब्ध कराया जा सके।

DECODE	FIRST ROUND OF CASE STUDIES	
Tŝilhqot'in territories, British Columbia, Canada	Connecting Indigenous-led research through climate, water and health issues	
Sarawak, Malaysia	Modernizing traditional apong production in Samarahan	
Inuit-Nunnangat, Arctic	Nanuk Narratives	
Gulu, Uganda	Regenerating Acholi Traditional Knowledge	
Kaleshwar, India	**Food from the Forest**	
Putumayo, Colombia	Guardians of the Forest	

डीकोड केस स्टडीज़ से प्राप्त प्रमुख बिंदु

1. **सामुदायिक एवं पारम्परिक ज्ञान और शैक्षणिक ज्ञान परस्पर विरोधी नहीं हैं**, बल्कि वे एक-दूसरे को पूरक और समृद्ध बना सकते हैं। इन केस स्टडीज़ से यह स्पष्ट होता है कि सामुदायिक ज्ञानधारकों और शैक्षणिक शोधकर्ताओं के बीच संवाद और सहयोग से अनुसंधान के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

2. **सामुदायिक एवं पारम्परिक ज्ञान केवल तकनीकी जानकारी तक सीमित नहीं होता**। यह ज्ञान संस्कृति, पहचान, भाषा-बोली, और आध्यात्मिक दृष्टिकोणों में निहित होता है, जो एक प्रभावशाली संरक्षण और समावेशिता जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है। यह ज्ञान प्रायः स्थानीय भाषाओं और बोलियों में व्यक्त किया जाता है।

3. **सामुदायिक आवश्यकताएं ही नए ज्ञान के सृजन और उसके उपयोग की प्रेरणा होती हैं**। जब शैक्षणिक शोधकर्ता इन ज़मीनी जरूरतों को अनुसंधान के सह-उत्पादन में शामिल करते हैं, तो साझेदारी की रुचि और संभावनाएं बढ़ती हैं। हालांकि, सामुदायिक ज्ञानधारकों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग समय, विश्वास और आपसी सम्मान की मांग करता है।

4. **ज्ञान संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य विभिन्न मध्यस्थ संगठन करते हैं**, जो स्थानीय संदर्भ के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। **HARC** ऐसा ही एक संगठन है, जो इस भूमिका को निभा रहा है।

5. **सामुदायिक आधारित सहभागी अनुसंधान (CBPR)** में ऐसे शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जो कला-आधारित और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त होते हैं। ये विधियां पूरे अनुसंधान प्रक्रिया में सामुदायिक ज्ञान को सम्मिलित करने हेतु सुरक्षित और समावेशी वातावरण प्रदान करती हैं।

6. **ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है**, जिससे विभिन्न हितधारकों तक पहुँचना संभव होता है। अकादमिक और जन-सामान्य—दोनों प्रकार के ज्ञान साझाकरण अनिवार्य हैं, ताकि अनुसंधान के आरंभिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।

7. **सामुदायिक पहलों में महिलाओं की नेतृत्व भूमिका और ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है**। महिलाएं विशेष रूप से वन-आधारित आजीविका, कृषि और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में ज्ञानधारक एवं विशेषज्ञ की भूमिका निभाती हैं। जब महिलाएं प्रकृति—जैसे भूमि, जंगल, जल, पौधे, और पशु—के बारे में अपने व्यापक ज्ञान को सार्वजनिक रूप से साझा करती हैं, तो इससे समुदाय में लैंगिक संबंधों में भी सकारात्मक बदलाव आता है।

8. **ज्ञान, आंकड़ों और लाभों का स्वामित्व न्यायसंगत रूप से साझा किया जाना चाहिए**, जिसके लिए सह-शासन (Co-governance) तंत्रों की आवश्यकता है। ज्ञान साझाकरण, स्वामित्व और लाभ-वितरण से जुड़े मुद्दों पर स्पष्ट संवाद और समझौते, साझेदारी में विश्वास बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं। इन विषयों पर नैतिक बातचीत साझेदारी की शुरुआत से ही शुरू होनी चाहिए और निरंतर चलती रहनी चाहिए।

9. **सह-प्रबंधन और सह-शासन की प्रक्रियाएं**, समुदाय और शैक्षणिक साझेदारों के बीच, ज्ञान के प्रभावी उपयोग और दीर्घकालिक प्रभाव सुनिश्चित करने में सहायक होती हैं। भले ही औपचारिक सह-शासन की संरचनाएं पूरी तरह स्थापित न हों, फिर भी समुदाय-नेतृत्व वाले सह-प्रबंधन प्रोटोकॉल प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।
10. **इन छह केस स्टडीज़ से यह सिद्ध होता है कि ज्ञान, आंकड़ों और लाभों का स्वामित्व न्यायसंगत रूप से साझा किया जाना चाहिए**। इसके लिए सह-शासन के तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है, जिनके प्रारंभिक उदाहरण अब सामने आने लगे हैं। इस प्रकार का अनुसंधान जलवायु-लचीला और स्थानीय आजीविका पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। इसके अतिरिक्त, अनुसंधान प्रक्रिया के दौरान और बाद में क्षमता-विकास में निवेश, सामुदायिक संगठनों को और अधिक सशक्त बनाता है।

"सामुदायिक या पारम्परिक ज्ञान शैक्षणिक ज्ञान का दुश्मन नहीं है। वे एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में रह सकते हैं, एक-दूसरे से सीख सकते हैं और एक-दूसरे पर आधारित हो सकते हैं। सामुदायिक ज्ञान केवल एक तकनीकी कौशल या विशेषज्ञता नहीं है, यह समुदाय की संस्कृति, पहचान और आध्यात्मिक दृष्टिकोण में निहित है। सामुदायिक ज्ञान को व्यवस्थित या व्यावहारिक क्रियावली के लिए उपयोग में लाने का तरीका उनकी जरूरतों पर निर्भर करता है, और जब इन जरूरतों को शैक्षणिक अंतर्दृष्टि के साथ जोड़ा जाता है, तो ये स्थानीय जलवायु संकटों के समाधान के रूप में काम आते हैं।"

— डॉ. राजेश टंडन

अंत में डॉ टंडन ने ,सभी चर्चा किए गए सामग्री के बारे में प्रतिभागियों को सूचित किया गया कि ये सभी ओपन एक्सेस हैं और पंजीकृत प्रतिभागियों के साथ साझा किए जाएंगे। उन्होंने यह भी बताया कि ongoing कार्य से दो कार्यपत्र तैयार किए गए हैं और प्रतिभागियों को इन कार्यपत्रों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यपत्रों का लिंक प्रतिभागियों के साथ साझा किया गया।

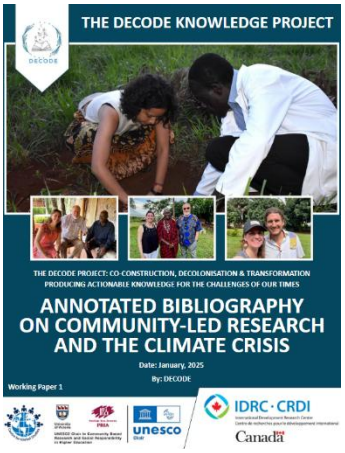

वर्किंग पेपर -1
https://tinyurl.com/476tuvbm

वर्किंग पेपर -2
https://tinyurl.com/5n8nrs53

केस स्टडी का प्रस्तुतीकरण

सत्र की शुरुआत एक सुंदर लोक गीत से हुई, जो हिमालय की पारंपरिक पारिस्थितिकी का उत्सव मनाता है और प्रकृति से हमारे गहरे जुड़ाव को दर्शाता है। श्री शैलेश पंवार ने उत्तराखंड के चमोली जिले का परिचय कराया, जहाँ हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (HARC) स्थित है। चमोली को "देवों का निवास" कहा जाता है और यह अपनी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यह बदरीनाथ जैसे पवित्र तीर्थ स्थलों का स्थान है और अपनी ऊँची पहाड़ियों के कारण ट्रेकिंग और हाइकिंग के लिए दुनियाभर के पर्यटकों को आकर्षित करता है। तिब्बत सीमा के पास स्थित यह इलाका दिल्ली से 439 किमी और देहरादून से 250 किमी दूर है, जिसकी वजह से यहाँ कई चुनौतियाँ और खास परिस्थितियाँ देखने को मिलती हैं।

श्री पंवार ने चमोली क्षेत्र की खास चुनौतियों की ओर ध्यान दिलाया, जिसमें यह बात प्रमुख रूप से सामने आई कि यहाँ की अर्थव्यवस्था काफी हद तक महिलाओं पर निर्भर है। महिलाएं खेती में मुख्य श्रमिक होती हैं। 1960 के पहले यहाँ वस्तु-विनिमय (बार्टर) प्रणाली चलती थी। जब नकद लेन-देन की अर्थव्यवस्था आई, तो पुरुषों और लड़कों को रोजगार के लिए गाँव छोड़ना पड़ा, लेकिन महिलाएं गाँव में ही रहीं। परंपरागत रूप से वे घर संभालती थीं, खेतों में काम करती थीं और चरागाहों की देखरेख भी करती थीं। बाद में जब सहकारी संस्थाएं बनीं, तो इन महिलाओं ने अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़ते हुए नई पहचान बनाई। यह सहकारी संस्था HARC के सहयोग से बनी, जिसने गाँव की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से संगठित किया।

स्रोत: *हिंदी स्टोरीमैप से*

यह केस स्टडी **"Food from Forest: Bridging Tradition, Science, and Sustainability in the Himalayas"** एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि कैसे पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक मूल्य और वैज्ञानिक सोच के मेल से सामुदायिक सह-प्रबंधन के ज़रिए सतत आजीविका, जलवायु-लचीलापन और महिला सशक्तिकरण को नया रास्ता मिल सकता है। इस अध्ययन में यह दिखाया गया है कि समुदाय-स्वामित्व वाली सहकारी संस्थाएं पारंपरिक अनुभव और वैज्ञानिक तरीकों को मिलाकर जलवायु परिवर्तन जैसी जटिल समस्याओं से प्रभावी ढंग

से निपट सकती हैं।**DECODE ज्ञान परियोजना** के अंतर्गत यह केस स्टडी यह स्पष्ट करती है कि जब समुदाय खुद अपने संसाधनों और पर्यावरण का प्रबंधन करते हैं, तो वे न सिर्फ पर्यावरण संरक्षण और जलवायु अनुकूलन में सफल होते हैं, बल्कि समाज के हर वर्ग, खासकर महिलाओं, को सशक्त बनाने की दिशा में भी ठोस कदम उठाते हैं।

महिलाओं द्वारा लोकगीत प्रस्तुति

श्री पंवार ने सहकारी संस्था की महिला सदस्यों द्वारा साझा की गई कहानियों और प्रस्तुतियों को प्रस्तुत किया।

- **सुश्री सरोजनी** ने तुलसी पर आधारित एक प्रेरणादायक कहानी साझा की—कैसे यह पारंपरिक पौधा महिलाओं के लिए सतत आजीविका का माध्यम बन गया। इस क्षेत्र में तेज़ बारिश और वन्यजीवों से फसलों को नुकसान होता था, लेकिन तुलसी ही एकमात्र पौधा था जो इन हालातों में भी बचा रहता था। HARC और समुदाय ने तुलसी की खेती में वाणिज्यिक संभावनाएं देखीं।

  हालांकि, एक चुनौती यह थी कि तुलसी को पवित्र माना जाता है, और उसे व्यापार के लिए उगाना कई लोगों के लिए सांस्कृतिक रूप से अस्वीकार्य था। इस स्थिति में HARC ने एक संवेदनशील और भागीदारीपूर्ण तरीका अपनाया। उन्होंने शोध संस्थानों और खाद्य वैज्ञानिकों के सहयोग से तुलसी की ऐसी किस्में पेश कीं जो धार्मिक उपयोग से अलग थीं और केवल वाणिज्यिक उद्देश्य के लिए थीं। इससे समुदाय अपनी धार्मिक मान्यताओं से समझौता किए बिना एक वैध और टिकाऊ आर्थिक रास्ता अपना सका।

  इस पहल में महिलाएं आगे आईं और उन्होंने तुलसी ग्रीन टी और मसाला चाय जैसे उत्पाद तैयार किए, जो खासकर COVID-19 महामारी के समय अपनी स्वास्थ्यवर्धक गुणों के चलते बहुत लोकप्रिय हुए। यह पहल न केवल महिलाओं के लिए आय का नया स्रोत बनी, बल्कि समुदाय में रेज़ीलिएंस (लचीलापन), नवाचार और सांस्कृतिक सम्मान का प्रतीक भी बन गई।

- **सुश्री रेखा** ने जंगली फलों के बारे में विचार साझा किए, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन देते हैं। आंवला, बेर, रोडोडेंड्रोन, पुदीना, त्रिफला और अन्य पौधे पारंपरिक रूप से घरों में उपयोग किए जाते हैं, लेकिन HARC और सहकारी के समर्थन से इन जंगली पौधों के वाणिज्यिक मूल्य और संभावनाओं को पहचाना गया। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की आय में विविधता आई।

- **श्री गणेश** ने सहकारी संस्था की शासी निकाय की संरचना की जानकारी दी, जिसमें कुल 9 सदस्य होते हैं—6 महिलाएं और 3 पुरुष। यह संरचना महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व को दर्शाती है। सहकारी संस्था के पास गुणवत्ता नियंत्रण, स्वच्छता और निगरानी के लिए अलग-अलग समर्पित समितियां भी हैं, जो उत्पादों की विश्वसनीयता और प्रक्रिया की पारदर्शिता सुनिश्चित करती हैं।वे वार्षिक, त्रैमासिक और मासिक बैठकों के ज़रिए अपनी उत्पादन और बिक्री की योजनाओं को साझा करते हैं और समीक्षा करते हैं। साथ ही, वे अन्य विकास संगठनों और एजेंसियों के साथ नेटवर्किंग करके संसाधनों और ज्ञान का आदान-प्रदान भी करते हैं।इसके अलावा, सहकारी संस्था स्वास्थ्य शिविर, जागरूकता अभियान, और सरकारी योजनाओं से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन भी करती है, जिससे समुदाय के समग्र विकास में योगदान होता है।

- **सुश्री भवानी** ने अपनी यात्रा साझा करते हुए यह बताया कि सहकारी संस्था ने उनके जीवन और समुदाय की अन्य महिलाओं पर क्या प्रभाव डाला। सहकारी के लॉन्च के साथ, गांव की महिलाओं को घर के पास ही स्थिर रोजगार के अवसर मिले। पैकिंग और लेबलिंग से लेकर उत्पादन प्रक्रिया के प्रबंधन तक, वे प्रत्येक कदम में शामिल हो गईं। इससे आय में वृद्धि हुई, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ, जैसे बेहतर भोजन और बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति।

हालांकि, इस यात्रा में चुनौतियां भी थीं। शुरुआत में, इन महिलाओं को सामाजिक प्रतिरोध और उपहास का सामना करना पड़ा। कई लोगों ने उनके घरों से बाहर काम करने के फैसले पर सवाल उठाए, और उन्हें रोज़ाना ताने सुनने पड़े। लेकिन महिलाएं अडिग रहीं और एक-दूसरे में और अपने काम में ताकत पाई। समय के साथ, वे और अधिक आत्मविश्वास से भरपूर हुईं और आज वे विज़िटर्स, खरीदारों और अधिकारियों के साथ पूरी तरह से बातचीत करने में सक्षम हैं।

सुश्री भवानी ने अंत में प्रौद्योगिकीय अवसंरचना की बात की, जिसने उनके सफलता में योगदान किया। HARC के समर्थन से, महिलाएं अब बॉयलर और पलपर जैसे मशीनों का संचालन करती हैं और कच्चे जंगल उत्पादों की प्रोसेसिंग को कुशलता से प्रबंधित करती हैं। उनके कार्यों के विस्तार के साथ, उनके उद्यम की लाभप्रदता भी बढ़ी है, जिससे उनके स्थानीय अर्थव्यवस्था में स्थान और मजबूती मिली है।

अंतिम शब्दों में, सुश्री भवानी ने HARC का आभार व्यक्त किया, जिसने ग्रामीण हिमालयी महिलाओं के लिए एक स्थायी आजीविका मॉडल बनाया—सिर्फ आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से भी। उनकी कहानी यह दर्शाती है कि जब सामुदायिक स्वामित्व और सही संसाधनों के साथ समर्थन किया जाता है, तो जड़ों से जुड़ी पहल स्थायी परिवर्तन को बढ़ावा देती हैं।

सहकारी कार्य के मुख्य बिंदु

पर्वतीय क्षेत्रों में चुनौतियाँ

पहाड़ी इलाकों में काम करना कई खास तरह की चुनौतियाँ लेकर आता है—जैसे कि दुर्गम रास्ते, सीमित संसाधनों की उपलब्धता, और कठोर मौसम की परिस्थितियाँ। इन मुश्किल हालातों के बावजूद, HARC की टीम ने नवाचारी रणनीतियों और दृढ़ संकल्प के साथ अद्भुत लचीलापन (रेज़ीलिएंस) दिखाया है।

उन्होंने अपनी कार्यप्रणालियों को इन कठिन भौगोलिक स्थितियों के अनुसार ढालते हुए सामाजिक उद्यम मॉडलों की स्थापना की, जो आज स्थानीय समुदायों के लिए न केवल आय का साधन हैं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

महिला कैडर और ज्ञान साझा करना

वर्तमान में, 131 समर्पित महिला कैडर सक्रिय रूप से समुदाय में कार्यरत हैं, जो ज्ञान का प्रसार करने और प्रशिक्षक की भूमिका निभा रही हैं। ये महिलाएं न सिर्फ निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में अपनी समझ और अनुभव साझा करती हैं, बल्कि बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने और सामुदायिक विकास की पहलों को आगे बढ़ाने में भी अहम योगदान देती हैं।

इनका नेतृत्व दूसरों को प्रेरित करता है और उन्हें सशक्त बनाता है। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत क्षमताएं बढ़ती हैं, बल्कि पूरे समुदाय का सामाजिक ढांचा और एकजुटता भी मजबूत होती है।

प्रभाव और पहुँच

HAKVBSS की प्रयास एवं पहलों ने अनगिनत लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। अब तक, इस संगठन ने 210 प्राथमिक सदस्यों को सीधे लाभान्वित किया है, उन्हें आवश्यक संसाधन और समर्थन प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त, उनके काम का प्रभाव 4,000 से अधिक गौण सदस्यों तक फैला हुआ है, जो इस बात का प्रतीक है कि सहकारी के कार्यक्रम क्षेत्र में कितनी बड़ी पहुँच बना रहे हैं।

योजना और रणनीति

HAKVBSS की सफलता के लिए प्रभावी योजना महत्वपूर्ण है। सहकारी एक व्यापक योजना दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें वार्षिक, त्रैमासिक, और मासिक अंतराल पर संरचित प्रक्रियाएँ होती हैं। यह सटीक योजना विपणन और बिक्री के लिए समर्पित रणनीतियों के विकास को शामिल करती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी पहलों का सही दर्शकों तक पहुँचने और अधिकतम प्रभाव डालने का अवसर मिले।

स्थापित उप-समितियाँ:

अपनी कार्यों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए, HARC ने कई विशेष उप-समितियाँ स्थापित की हैं, प्रत्येक समिति उनके काम के महत्वपूर्ण पहलुओं पर केंद्रित है:

- **निगरानी समिति (Nigrani Samiti)**: परियोजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी करने और यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार कि उद्देश्य कुशलता से पूरे किए जाएं।
- **स्वच्छता समिति (Swachhta Samiti)**: पर्यावरणीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए पहलों को बढ़ावा देने पर केंद्रित; समुदाय में स्वच्छता प्रथाओं को प्रोत्साहित करना।
- **गुणवत्ता नियंत्रण समिति**: HARC के सामाजिक उद्यमों के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले उत्पादों और सेवाओं के मानकों को बनाए रखने का कार्य, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे लाभार्थियों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को पूरा करें।

इन प्रयासों के माध्यम से, HAKVBSS चुनौतीपूर्ण भौगोलिक स्थितियों में भी सतत विकास और सामुदायिक लचीलापन को बढ़ावा दे रहा है।

नेटवर्किंग और सहयोग

HARC सक्रिय रूप से अन्य विकास एजेंसियों के साथ नेटवर्क करता है, उन्हें क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के लिए आमंत्रित करता है। वे समुदाय को वृक्षारोपण अभियानों, स्वास्थ्य शिविरों और अन्य सहभागिता गतिविधियों के माध्यम से भी संलग्न करते हैं।

"इस पहल ने हमें आजीविका के अवसर और सशक्तिकरण दिया है। अब हम अपने घरों की आय में योगदान करते हैं। पहले लोग हमें ताना मारते थे—'तुम बाहर जाती हो!' लेकिन हम नहीं रुके। हम आगे बढ़ते गए और आज उन्नत मशीनरी का संचालन करते हैं। जब हमने शुरुआत की थी, तो हमारी वार्षिक आय ₹2–2.5 लाख थी। आज, यह बढ़कर ₹3–4 करोड़ हो गई है।"
— श्रीमती भवानी, सहकारी सदस्य

पारंपरिक ज्ञान और सतत विकास के बीच के तालमेल पर विचार करते हुए, डॉ. करोल ने जोर दिया कि जलवायु क्रियावली को स्थानीय बनाना चाहिए, जो अनुभवजन्य ज्ञान से प्रेरित हो। उन्होंने सहकारी समितियों के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण को बढ़ाने में भूमिका की पुनरावृत्ति की। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि HARC जैसे मॉडल समावेशी, न्यायपूर्ण और पुनर्योजी विकास के लिए एक स्केलेबल प्रारूप प्रस्तुत करते हैं।

"जब हम समुदाय-नेतृत्व वाले सतत विकास और सामूहिक क्रियावली की बात करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम इस पर विचार करें कि पारंपरिक ज्ञान को कैसे सतत विकास के लिए व्यापार मॉडल में बदला जा सकता है। HARC का सहकारी इस प्रक्रिया का एक शक्तिशाली उदाहरण है, जहाँ पारंपरिक ज्ञान को मान्यता देकर और उसका उपयोग करके आर्थिक अवसर उत्पन्न किए जाते हैं।"
— डॉ. अंशुमान करोल, PRIA

5. वक्ता एवं परिचर्चा का संछिप्त विवरण

डॉ. द्युतिमान चौधरी

डॉ. द्युतिमान चौधरी CIMMYT के सस्टेनेबल एग्रीफूड सिस्टम्स प्रोग्राम में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं और नेपाल के लिए इसके कंट्री रिप्रेजेंटेटिव के रूप में कार्य करते हैं। 26 वर्षों के अनुभव के साथ, उन्होंने समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, ग्रामीण उद्यम विकास, और एग्री-बिजनेस में कार्य किया है। वे पहले ICRISAT, नैरोबी में कार्यरत थे, जहां उन्होंने पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में विकास रणनीतियों की देखरेख की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने ICIMOD में उच्च मूल्य उत्पादों और मूल्य श्रृंखलाओं के लिए नेतृत्व किया। डॉ. चौधरी ने व्यवसाय प्रबंधन में पीएचडी, एग्रीबिजनेस प्रबंधन में MBA, और वन विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। उनके पास दक्षिण एशिया, चीन, म्यांमार, और पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका में व्यापक शोध और कार्यक्रम प्रबंधन का अनुभव है, जिसमें 2009 से 2014 तक हिमालयी महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान का प्रमाणीकरण और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं की स्थापना शामिल है।

HARC (2008–2009) में अपनी प्रारंभिक भागीदारी का हवाला देते हुए, डॉ. चौधरी ने उन बुनियादी कार्यों की पुनरावलोकन किया जो आज के जलवायु अनुकूलन प्रयासों में प्रासंगिक और प्रभावी बने हुए हैं।

डॉ. चौधरी ने पर्वतीय आजीविकाओं को विविध रूप से समझाया, जो कृषि, पशुपालन, वन और चरागाह उपयोग जैसी कृषि आधारित गतिविधियों और छोटे व्यवसायों और वेतन कार्य जैसे गैर-कृषि आय स्रोतों से आकारित होती हैं। हालांकि, जलवायु परिवर्तन, वैश्वीकरण, और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों जैसे वैश्विक संकटों ने इन आजीविकाओं को अधिक संवेदनशील बना दिया है, विशेष रूप से महिलाओं को प्रभावित किया है, जो पर्वतीय क्षेत्रों में खाद्य उत्पादन और पोषण सुरक्षा के लिए केंद्रीय हैं।

डॉ. चौधरी ने मूल्य श्रृंखलाओं के विकास के महत्व पर जोर दिया जो ट्रिपल बॉटम लाइन दृष्टिकोण को आगे बढ़ाती हैं:

1. पर्यावरणीय स्थिरता
2. लैंगिक समानता
3. गरीबी उन्मूलन

" जंगल से खाद्य पदार्थ" (फूड फ्रॉम द फॉरेस्ट) पहल एक प्रेरक उदाहरण के रूप में उभरी, जो यह दिखाती है कि कैसे महिलाओं द्वारा संचालित, समुदाय-आधारित उद्यम संवेदनशील पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र में संरक्षण के साथ आर्थिक अवसरों को जोड़ सकते हैं।

औपनिवेशकरण (डेकोलोनाइजेशन) के लिए एक उपकरण के रूप में क्रियात्मक अनुसंधान (एक्शन रिसर्च)

इस पहल का एक केंद्रीय सिद्धांत था भागीदार कार्यात्मक अनुसंधान, जिसका उद्देश्य उपनिवेशवादी विचारधाराओं को समाप्त करना और स्वदेशी ज्ञान को पुनः प्राप्त करना था। इसमें शामिल था:

- पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ना
- समुदाय के समावेश के माध्यम से समान्य व्यवस्थाएँ बनाना
- वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से पारंपरिक प्रथाओं का प्रमाणीकरण

उदाहरण के लिए, चमोली में, वन पंचायतों द्वारा बनाए गए पारंपरिक वन मानदंडों को वैज्ञानिक प्रमाणिकता के माध्यम से मजबूत किया गया, जिससे अंततः सरकारी स्वीकृति और टिकाऊ हार्वेस्टिंग मॉडलों की स्वीकृति मिली।

बाजारों और संस्थाओं में नवाचार

पारंपरिक प्रथाओं को समृद्ध किया गया था:

- आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों द्वारा
- उपभोक्ता-उन्मुख नवाचारों (जैसे, बेहतर पैकेजिंग, स्वच्छता, दृश्य आकर्षण)
- संस्थागत संबंधों के माध्यम से पारंपरिक उत्पादों को आधुनिक बाजारों में प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए उदाहरणों में मॉल्टा नारंगी, आंवला, और तुलसी का बेहतर प्रसंस्करण शामिल था। तुलसी के मामले में, खेती की प्रथाओं को यूजेनोल सामग्री को बढ़ाने के लिए अनुकूलित किया गया—सांस्कृतिक संरक्षण और वैज्ञानिक परिष्कार का संतुलन बनाते हुए।

सह-उत्पादन (को-प्रोडक्शन)का एक प्रेरक उदाहरण चमोली की नजमोल घाटी में बे लीफ पहल थी। डॉ. चौधरी ने साझा किया कि कैसे इस परियोजना ने वन नीति में बदलाव की शुरुआत की:

- परमिट निजी व्यापारियों से वन पंचायतों को स्थानांतरित किए गए।
- महिलाओं को संग्रहण और पोस्ट-हार्वेस्ट प्रक्रियाओं का नेतृत्व करने का अवसर मिला।
- उत्तराखंड वन विकास निगम के साथ मिलकर एक समुदाय-आधारित आचार संहिता का सह-निर्माण किया गया।

स्थायी हार्वेस्टिंग प्रथाओं को लागू किया गया, जैसे:

- बे लीफ वृक्षों के केवल निचले दो-तिहाई हिस्से को इकट्ठा करना।
- अनुमानित उपज का 40% तक सीमित रखना।
- स्थायी रूप से इन्वेंट्री की योजना बनाना, जैसे 2,000 पेड़ 50 टन सूखी पत्तियों का उत्पादन करेंगे (प्रत्येक बैग में लगभग 25 किलोग्राम)।

इससे प्राप्त परिणाम:

- पर्यावरणीय रूप से ध्वनि संसाधन उपयोग।
- स्थानीय स्वामित्व और शासन में वृद्धि।
- बाजार तक पहुँच में बदलाव, जिससे कार्बन और लागत में कमी आई।

"HARC की पहल यह दर्शाती है कि कैसे समुदाय-आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जिसे राज्य और गैर-राज्य दोनों अभिनेताओं द्वारा सह-निर्देशित किया जाता है, सफल हो सकता है। को-प्रोडक्शन, डेकोलोनाइजेशन और परिवर्तनकारी परिवर्तन उन संस्थाओं पर निर्भर करते हैं जो इसका नेतृत्व करती हैं। ये संस्थाएँ लोगों को निर्णय लेने का अधिकार देती हैं, यह एक शीर्ष-से-नीचे की दृष्टिकोण के बजाय लोगों को नेतृत्व करने देती हैं। यह एक सह-शासन मॉडल बनाता है, जो डॉ. टंडन की स्थायी विकास की दृष्टि के अनुरूप है।"

-डॉ. द्युतिमान चौधरी

वक्तव्य सारांश

तुलसी पहल ने यह रेखांकित किया कि जब पारंपरिक किस्मों को वैज्ञानिक नवाचारों के साथ जोड़ा जाता है तो यह परिवर्तनकारी परिणामों को अनलॉक कर सकता है।

डॉ. चौधरी ने समापन करते हुए महत्वपूर्ण निष्कर्षों को साझा किया:

- को-प्रोडक्शन, डेकोलोनाइजेशन, और परिवर्तनकारी परिवर्तन आपस में जुड़े हुए हैं।
- सफलता तब आती है जब समुदाय अग्रणी होते हैं।
- शीर्ष-से-नीचे के मॉडल कम प्रभावी होते हैं बनिस्बत उन मॉडल्स के जो स्थानीय ज्ञान और सामूहिक स्वामित्व में आधारित होते हैं।

उन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में समुदायों को सशक्त बनाने और सतत, समावेशी और लचीले विकास को पोषित करने वाली संस्थाओं को निरंतर समर्थन देने का आह्वान किया।

प्रो. पाउला बनर्जी

प्रोफेसर पाउला बनर्जी सीमावर्ती क्षेत्रों और फोर्स्ड माइग्रेशन में महिलाओं के मुद्दों की विशेषज्ञ हैं। वे संस्कृत कॉलेज और विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति रही हैं और *International Association for Studies in Forced Migration* की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। वर्तमान में, वे थाईलैंड स्थित *Asian Institute of Technology* में *IDRC Endowed Chair on Gender and Forced Displacement* पद पर कार्यरत हैं।

प्रोफेसर बनर्जी एक प्रतिष्ठित शोधार्थी हैं, जिन्हें कई पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें 2013 में प्राप्त *Fulbright SIR* भी शामिल है। उनका शोध मुख्यतः प्रवासियों और शरणार्थियों के मानवाधिकारों पर केंद्रित है, विशेष रूप से दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के संदर्भ में। उनकी हालिया प्रकाशित पुस्तकों में *"The Long 2020"* (2024) और *"Gender, Identity and Migration"* (2022) शामिल हैं।

वे जर्मनी में अतिथि प्रोफेसर भी हैं और *Journal of Refugee Studies* सहित कई अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं की संपादकीय बोर्ड की सदस्य हैं। साथ ही, वे प्रवासी श्रमिकों के अधिकारों पर *अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)* की वरिष्ठ सलाहकार के रूप में भी कार्य कर रही हैं।

प्रोफेसर बनर्जी ने विकास और शोध विमर्श में आमतौर पर प्रयुक्त 'सशक्तिकरण' की अवधारणा की एक सशक्त आलोचना प्रस्तुत की।

"शोधकर्ता अक्सर कहते हैं कि उनका काम समुदायों को सशक्त करेगा। सच कहूं तो मुझे यह हास्यास्पद लगता है... क्योंकि वास्तव में हम— शोधकर्ता— ही इस प्रक्रिया में सशक्त हो रहे होते हैं। समुदाय हमसे कहीं अधिक सशक्त होते हैं। वे हमारे शिक्षक हैं। हम अधिक से अधिक केवल सुगमकर्ता हो सकते हैं— उनके जीवन के अनुभवों को नीति मंचों तक पहुंचाने वाले।"
— प्रो. पाउला बनर्जी

प्रोफेसर बनर्जी ने ज़ोर देकर कहा कि शोधकर्ताओं की भूमिका ज्ञान थोपने की नहीं, बल्कि समुदायों के अनुभवों को बड़े मंचों तक ले जाने की होनी चाहिए। शोधकर्ताओं की ज़िम्मेदारी है कि वे:

- स्थानीय ज्ञान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नीति संवादों में अनुवादित करें।
- यह सुनिश्चित करें कि शोध की प्रक्रिया समुदाय की आवाज़ों के प्रति जवाबदेह हो।
- संदर्भित, जीवंत अनुभवों की गहराई को मान्यता और सम्मान दें।

उन्होंने एक प्रवासी फूल विक्रेता महिला का उदाहरण दिया, जिसकी आजीविका जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित होती है — यह दिखाने के लिए कि जलवायु परिवर्तन कोई सैद्धांतिक मुद्दा नहीं बल्कि रोज़मर्रा की हकीकत है।

"उस प्रवासी महिला को केवल चार अच्छे घंटे मिलते हैं— सुबह 6 से 10 बजे तक— जब तक गर्मी उसके फूलों को खराब नहीं कर देती। शाम को वह फिर कोशिश करती है।"

प्रोफेसर बनर्जी ने शोध की नैतिकता पर भी गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने उस मॉडल की आलोचना की जिसमें शोधकर्ता केवल डेटा एकत्र करते हैं और फिर वापस नहीं आते — समुदाय को कुछ लौटाए बिना।

"बहुत बार, समुदायों को सिर्फ 'फील्ड साइट' के रूप में देखा जाता है। लोग डेटा ले जाते हैं और फिर कभी नहीं लौटते— कोई फीडबैक नहीं, कोई मान्यता नहीं, कोई सराहना नहीं। यह सिर्फ अनैतिक नहीं, बल्कि हिंसक है।"

उन्होंने कहा कि समुदाय-संलग्न अनुसंधान में सहानुभूति, सम्मान, विनम्रता और समय की आवश्यकता होती है।*"सही नृजातिलेखन (एथ्नोग्राफी) एक दिन में नहीं हो सकती। इसके लिए संबंध निर्माण, विश्वास और लगातार उपस्थिति ज़रूरी है।"*

उन्होंने यह भी कहा कि समुदाय का ज्ञान केवल आँकड़ों में नहीं समाया जा सकता। यह आपसी रिश्तों में गहराई से निहित होता है। उन्होंने चिपको आंदोलन की विरासत का उदाहरण देते हुए कहा: *"उन महिलाओं ने कोई लिटरेचर रिव्यू नहीं किया था, कोई सर्वे डिज़ाइन नहीं किया था। वे केवल अपने राजनीतिक विश्वासों को जी रही थीं।"*

वक्तव्य सारांश

अपने अंतिम और भावनात्मक संबोधन में प्रोफेसर बनर्जी ने प्रतिनिधित्व के सवाल को उठाया। उन्होंने इस बात पर सवाल किया कि जब सत्रों में महिलाओं के सशक्तिकरण की लगातार बात हो रही थी, तब महिलाओं को नेतृत्व की जगह क्यों नहीं दी गई? उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि **समुदायों की महिलाएं नेतृत्व करें — सबसे आगे रहें।**

उन्होंने शोधकर्ताओं से राजनीतिक नैतिकता के साथ काम करने की अपील की: "उन्होंने एक सशक्त आह्वान के साथ अपनी बात समाप्त की, जिसमें उन्होंने शोधकर्ताओं से राजनीतिक ईमानदारी के साथ कार्य करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि ज्ञान की असमान और हिंसक दुनिया में, हमारी राजनीति ऐसी होनी चाहिए जो हाशिए के स्वर को मुखर बनाए और उनके सत्य को आगे बढ़ाने का माध्यम बने।"

डॉ. अर्जन डी हान

डॉ. अर्जन कनाडा के *इंटरनेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर* (IDRC) में क्लाइमेट स्पेशलिस्ट हैं। वे नई दिल्ली में स्थित हैं और *FCDO-IDRC* के तहत *क्लाइमेट एडाप्टेशन एंड रेज़ीलिएंस (CLARE)* कार्यक्रम के अंतर्गत एशिया में परियोजनाओं की ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं। उनका कार्य मुख्यतः दक्षिण आधारित अनुसंधान को समर्थन देना है, जिसमें कोविड-19 महामारी के जवाब में की गई अध्ययन शामिल हैं, और नीति विश्लेषण में जलवायु और लैंगिक समानता को एकीकृत करना शामिल है। इससे पहले, उन्होंने IDRC के *GROW* कार्यक्रम का नेतृत्व किया था, जो महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर केंद्रित था। उन्होंने विकास संदर्भों में सामाजिक नीति, श्रमिक प्रवासन, सामाजिक विषमताओं और सहायता उद्योग पर प्रकाशित किया है और शिक्षण भी दिया है।

डॉ. अर्जन ने संगठन के दीर्घकालिक प्रयासों की सराहना की, जो जमीनी अनुभवों को उभारते हैं और उन्हें नीति और शासन स्तर पर प्रासंगिक बनाते हैं। दाताओं को शामिल करने की रणनीतियों और समुदाय-आधारित अनुसंधान को समर्थन देने के महत्व पर चर्चा करते हुए उन्होंने दोहराया कि भले ही फंडिंग एजेंसियों की भूमिका सीमित प्रतीत हो, यह प्रणालीगत परिवर्तन को समर्थन देने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अपने वक्तव्य में डॉ. अर्जन ने IDRC की जलवायु अनुकूलन कार्यक्रम के माध्यम से इस प्रतिबद्धता को रेखांकित किया कि वैज्ञानिक ज्ञान न केवल उत्पादित किया जाए, बल्कि उसे जमीनी स्तर की जटिल और तात्कालिक चुनौतियों से अर्थपूर्ण रूप में जोड़ा भी जाए। उन्होंने बताया कि दक्षिण एशिया में जलवायु की असुरक्षाएं पहले से ही गहराई से मौजूद हैं, और *कलेश्वर* जैसे समुदाय जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अनुभव कर रहे हैं, भले ही वैश्विक तापमान 1.25°C की सीमा को औपचारिक रूप से पार न किया गया हो।

डॉ. अर्जन ने DECODE, PRIA और उनके स्थानीय साझेदारों के कार्य को समयानुकूल और अत्यंत आवश्यक बताया। उन्होंने कलेश्वर टीम, विशेषकर *हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (HARC)* को उनके निरंतर, समुदाय-नेतृत्व वाले प्रयासों के लिए बधाई दी। एक फंडर के दृष्टिकोण से, उन्होंने कहा कि ऐसे जमीनी केस स्टडीज़ यह सिद्ध करते हैं कि दीर्घकालिक, समुदाय-आधारित दृष्टिकोण कितने आवश्यक हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि स्थानीय असुरक्षाएं गहरे संरचनात्मक और ऐतिहासिक कारणों से उत्पन्न होती हैं, और सार्थक परिवर्तन केवल अल्पकालिक या ऊपर से थोपे गए समाधानों से संभव नहीं हैं।

डॉ. अर्जन ने प्रोफेसर पाउला बनर्जी के उस विचार को दोहराया कि जलवायु लचीलापन और स्थानीय शासन में महिलाओं की आवाजें केंद्रीय होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में महिलाओं ने हमेशा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और इस सत्र में की गई चर्चाएं इस सच्चाई की पुष्टि करती हैं।

DECODE परियोजना से प्राप्त एक प्रमुख सीख, डॉ. अर्जन के अनुसार, यह है कि *सामुदायिक ज्ञान और वैज्ञानिक प्रमाणों के बीच की खाई को पाटना आवश्यक है*। इन दोनों को विरोध में रखने के बजाय, चुनौती और अवसर इस बात में निहित हैं कि इन्हें समानता, सम्मान और समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ एक साथ लाया

जाए। उन्होंने कहा कि *"सिर्फ सैटेलाइट डाटा या वैज्ञानिक विश्लेषण उत्पन्न करना पर्याप्त नहीं है, जब तक कि यह ज्ञान उन लोगों तक न पहुंचे जो रोज़ इन प्रभावों के साथ जी रहे हैं और उनमें अनुकूलन के प्रयास कर रहे हैं।"*

"हम यह इंतज़ार नहीं कर सकते कि व्यवस्था स्वयं बदले; हमें सुनिश्चित करना होगा कि हम जैसे-जैसे आगे बढ़ें, ज्ञान की प्रणालियों को बदलें।"

— डॉ. अर्जन डी हान

वक्तव्य सारांश

उन्होंने कालेश्वर टीम के प्रयासों की फिर से प्रशंसा की और कहा कि उनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चल रही, समुदाय-आधारित लचीलापन की यह यात्रा दूसरों के लिए एक प्रेरक मॉडल है। उन्होंने अन्य फंडर्स और संस्थानों से आग्रह किया कि वे ऐसे तंत्रों को समर्थन दें जो ज्ञान के सह-निर्माण को सक्षम करें, स्थानीय समुदायों को ठोस लाभ पहुंचाएं, और जिनसे शक्ति का स्थानांतरण वास्तव में उन लोगों की ओर हो जिनके पास जीवंत अनुभव हैं।

अंततः, डॉ. अर्जन ने जलवायु ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र में न्याय और समानता की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह केवल फंडिंग के तरीकों में बदलाव से नहीं, बल्कि स्थानीय और वैश्विक ज्ञान प्रणालियों के बीच दीर्घकालिक साझेदारियों की प्रतिबद्धता से ही संभव हो सकता है। उन्होंने DECODE परियोजना और इस सत्र में हुई चर्चाओं को ऐसे सहयोगी, न्यायपूर्ण और समान दृष्टिकोणों के सशक्त उदाहरण बताया जो व्यवहार में उतारे जा सकते हैं।

समापन टिप्पणी

डॉ. महेन्द्र सिंह कुँवर

डॉ. महेन्द्र सिंह कुँवर हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (HARC) के संस्थापक सदस्य और मुख्य सलाहकार हैं। उनके पास हिमालयी क्षेत्रों में 40 से अधिक वर्षों का विकासात्मक अनुभव है। उनका कार्य क्षेत्र समग्र और सहभागी विकास, कृषि-व्यवसाय संवर्धन, विकास संचार, लघु उद्यम विकास, ग्रामीण विपणन नेटवर्क और उपयुक्त तकनीक को बढ़ावा देने तक विस्तृत है। योजना निर्माण, क्रियान्वयन और निगरानी एवं मूल्यांकन में भी उन्हें गहन अनुभव प्राप्त है। बीते चार दशकों में, उन्होंने HARC के माध्यम से हजारों समुदायों की आजीविका में सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। ग्रामीण विकास में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें कई स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समितियों का सदस्य भी नामित किया गया है।

HARC के वरिष्ठ सलाहकार और संस्थापक सदस्य के रूप में, डॉ. कुँवर ने अकादमिक शोध और जमीनी समुदायों के बीच अब तक बनी दूरी पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत किया। प्रोफेसर पाउला बनर्जी का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि "समुदाय केवल जानकारी का स्रोत नहीं है।" उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अब समय आ

गया है कि हम स्थानीय ज्ञान प्रणालियों को कमतर आंकने वाली 'एकत्रित कर चले जाने वाली' शोध पद्धति को पुनः विचार करें।

उत्तराखंड के परिप्रेक्ष्य को सामने रखते हुए उन्होंने कहा कि राज्य में 27 विश्वविद्यालय होने के बावजूद ज़मीनी मुद्दों—जैसे भूमि और वन संसाधनों की संरचना—पर शोध का असर नीति निर्माण में बहुत कम दिखाई देता है। अक्सर शोध विश्वविद्यालयों या पुस्तकालयों तक सीमित रह जाता है और समुदायों की आवश्यकताओं से जुड़ नहीं पाता।

डॉ. कुँवर ने सतत विकास और स्थानीय सीखने की दिशा में *ज्ञान तक मुक्त पहुंच* को आवश्यक बताया। उन्होंने DECODE परियोजना को एक सराहनीय उदाहरण बताया, जिसमें वैज्ञानिक शोध को पारंपरिक ज्ञान के साथ समाहित किया गया है—जो विशेष रूप से उत्तराखंड के लगभग 3,000–4,000 वन ग्रामों के लिए बेहद प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि इस तरह का एकीकरण न केवल आजीविका बल्कि सशक्तिकरण के लिए भी अत्यंत आवश्यक है, विशेषकर जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों में।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष के लिए समुदायों की *ज्ञान, कार्य और संसाधनों पर* मालिकाना भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों को केवल जानकारी के स्रोत नहीं, बल्कि मान्य, जीवंत और अनुकूलनशील ज्ञान प्रणालियों के रूप में स्वीकार करने का आग्रह किया।

इसके साथ-साथ, डॉ. कुँवर ने यह भी आलोचना की कि अक्सर शैक्षणिक और विकास संस्थान एक-दूसरे से अलग-थलग होकर कार्य करते हैं। उन्होंने कहा:

"हम अकसर अपने-अपने घेरे में काम करते हैं और यह भी नहीं जानते कि हमारे मॉडल को सराहा जा रहा है या नहीं, या क्या वह दोहराए जा सकते हैं। ऐसे में, जो मंच समुदायों और संस्थानों के बीच ज्ञान साझा करने की सुविधा देते हैं, उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे मंच पारस्परिक सीख को बढ़ावा देते हैं और जलवायु परिवर्तन व सतत विकास जैसी चुनौतियों से सामूहिक रूप से निपटने की शक्ति प्रदान करते हैं।"

– डॉ. महेन्द्र सिंह कुँवर

इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए उन्होंने ऐसे मंचों के निर्माण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जो ज्ञान और अनुभव के साझाकरण को बढ़ावा दें। उन्होंने कहा कि यह सहभागिता पारस्परिक विश्वास और सीख के माध्यम से ज़मीनी स्तर पर बदलाव की दिशा में बड़ा कदम हो सकती है।

डॉ. महेन्द्र सिंह कुँवर के समापन टिप्पणी के उपरान्त वेबिनार का संचालन कर रहे डॉ. करोल ने HARC के सलाहकार द्वारा साझा किए गए बहुमूल्य विचारों की सराहना की और इस बात को दोहराया कि DECODE परियोजना ने भारत सहित वैश्विक स्तर पर अकादमिक संस्थानों, शोध संगठनों और समुदायों के बीच मजबूत सेतु का कार्य किया है।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि समुदाय-आधारित जलवायु अनुकूलन रणनीतियों को मान्यता देना, उनका दस्तावेजीकरण करना और व्यापक रूप से साझा करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि ज़मीनी और संदर्भ-विशेष प्रतिक्रियाओं में ही असली शक्ति निहित है।

वेबिनार की तैयारी: जब महिलाएँ बोलीं, पहाड़ों ने सुना और दुनिया ने जाना

चमोली की ऊँचाई और शांति के बीच DECODE वेबिनार का आयोजन कोई साधारण प्रयास नहीं था। देहरादून की हलचल से निकलकर लगभग पाँच घंटे की यात्रा—संकरी पहाड़ी सड़कों, तीखे मोड़ों और जगह-जगह चल रहे निर्माण कार्य के बीच से गुजरते हुए—अपने आप में एक अनोखा अनुभव बन गई। जैसे-जैसे हम ऊँचाई की ओर बढ़ते गए, वैसे-वैसे शहर की भागदौड़ से दूरी और गहराती चली गई। 'देवभूमि' के नाम से विख्यात चमोली में पहुँचते ही जो शांति और ठहराव मिला, वह शहरी जीवन की तेज़ रफ्तार से एकदम अलग था।

इसी शांत वातावरण में स्थित है HARC का कार्यालय—हिमालय की तलहटी में बसा, पास ही बहती नदी की कलकल धारा से गूंजता हुआ। यहाँ की नीरवता, हरीतिमा और शुद्ध हवा इस स्थान की आध्यात्मिकता और पारिस्थितिक समृद्धि का जीता-जागता प्रमाण हैं। लेकिन इस सुंदर एकांत के साथ चुनौतियाँ भी आती हैं—विशेषकर जब कोई तकनीकी कार्यक्रम जैसे वेबिनार आयोजित करना हो।

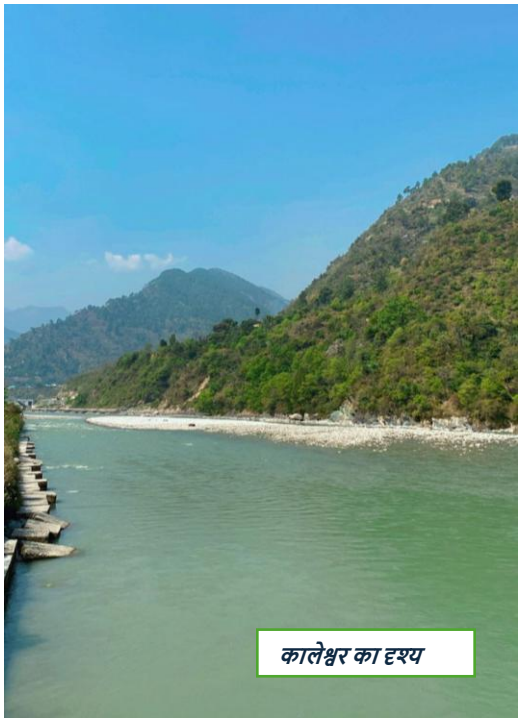
कालेश्वर का दृश्य

HARC और PRIA की साझी टीम को दिल्ली से आवश्यक उपकरण—लैपटॉप, प्रोजेक्टर, कैमरा, स्पीकर, केबल, ट्राइपॉड—सभी कुछ लेकर आना पड़ा। पहाड़ी इलाक़े में तकनीकी आधारभूत ढाँचा खड़ा करना आसान नहीं था। HARC का दफ्तर किसी पारंपरिक कार्यालय की तरह शांत नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रसंस्करण इकाई की तरह है, जहाँ स्थानीय लोगों की आवाजाही बनी रहती है। ऐसे में वेबिनार के लिए बिना व्यवधान के स्थान और माहौल बनाना भी एक बड़ी चुनौती था।

वेबिनार से एक दिन पहले, जब सारी तैयारी पूरी कर ली गई और उपकरणों की जाँच कर ली गई, तभी अचानक बिजली चली गई। हालाँकि HARC के पास एक जनरेटर था, लेकिन वह लंबे समय से इस्तेमाल नहीं हुआ था। टीम ने बिना देर किए काम संभाला—स्टोर से एक्सटेंशन कॉर्ड निकाला गया और जनरेटर से जोड़ने की कोशिश की गई। पर दुर्भाग्यवश, वह भी काम नहीं कर रहा था। जैसे-जैसे शाम ढलती गई, टीम ने धैर्य और संकल्प के साथ कॉर्ड को खोलकर उसकी वायरिंग ठीक की और पुनः जोड़ने की कोशिश की—इस आशा के साथ कि कहीं कोई चिंगारी जले, शाब्दिक भी और प्रतीकात्मक भी। अब वेबिनार केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सामूहिक मिशन बन चुका था।

HARC की पूरी टीम ने अपने-अपने हिस्से की जिम्मेदारी उठाई—किसी ने प्रोजेक्टर संभाला, किसी ने जनरेटर, तो कोई बाहरी शोर-शराबे को रोकने में लगा रहा। यह एक जीवंत उदाहरण था टीम भावना, जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता का।

सभी की साँसें अटकी थीं—प्रार्थना, आशा और प्रयास का सहारा था कि सब कुछ समय पर सही चले। आखिरकार जनरेटर चल पड़ा, लेकिन अगले दिन की अनिश्चितता अब भी बनी हुई थी—कोई बंदर आ सकता था, अचानक बारिश हो सकती थी या कोई तकनीकी गड़बड़ी। सबकुछ नियति के हवाले कर, टीम ने रात को विश्राम किया।

दूसरी ओर, सहकारिता की महिलाएँ आश्चर्यजनक रूप से आत्मविश्वास से भरी हुई थीं। अपने जीवन के अनुभवों को दुनिया भर के लोगों के सामने साझा करने का विचार उन्हें तनिक भी डगमगा नहीं रहा था। और क्यों होता? वे अभिनय नहीं कर रही थीं—बस अपने जीवन की सच्ची कहानियाँ बता रही थीं, उसी आत्मा और सच्चाई के साथ, जिससे वे जिया करती हैं।

अगले दिन, वेबिनार बिना किसी विघ्न के सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ—एक ऐसा परिणाम, जो सामूहिक मेहनत और समर्पण से ही संभव हो सका। सौ से अधिक प्रतिभागी देश-विदेश से जुड़े। इस संख्या से घबराने के बजाय, महिलाओं ने इसे अपनी आवाज़, अनुभव और संघर्षों की मान्यता के अवसर के रूप में देखा।

यह अनुभव केवल एक डिजिटल कार्यक्रम के सफल संचालन का नहीं था, बल्कि यह दर्शाता है कि ज़मीनी चुनौतियों का सामना टीम भावना, लचीलापन और स्थानीय लोगों व स्थान के प्रति आदर भाव के साथ कैसे किया जा सकता है। इस पूरी प्रक्रिया ने यह भी स्पष्ट किया कि ऐसे मंच केवल सहभागिता सुनिश्चित नहीं करते, बल्कि समुदायों को यह एहसास भी कराते हैं कि उनके अनुभव महत्त्वपूर्ण हैं—उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सुना जाना चाहिए।इस तरह के अवसरों से एक सशक्त संदेश जाता है—स्थानीय ज्ञान और अनुभव उपेक्षणीय नहीं हैं, बल्कि वे हमारे सामूहिक भविष्य की दिशा तय करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

PRIA की श्रुति ने हिमालय क्षेत्र में सामुदायिक लचीलापन और सतत विकास में योगदान के लिए HARC टीम को सम्मान स्वरूप एक स्मृति चिन्ह भेंट किया।

निष्कर्ष और मुख्य बिंदु

"जंगल से खाद्य पदार्थ: हिमालय में परंपरा, विज्ञान और स्थिरता के बीच पुल निर्माण" वेबिनार ने शिक्षाविदों, सामुदायिक नेताओं, विकासकर्मियों और विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर यह समझने का अवसर प्रदान किया कि पारंपरिक ज्ञान प्रणाली — जब उन्हें मान्यता और सम्मान दिया जाए — तो वे वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ मिलकर नाज़ुक पर्वतीय पारिस्थितिक तंत्रों में सतत और समावेशी विकास को कैसे बढ़ावा दे सकती हैं। सत्र के दौरान साझा की गई बातचीतों, कहानियों और अनुभवों से कई महत्वपूर्ण बातें सामने आईं:

1. **लचीलापन (Resilience) की नींव के रूप में पारंपरिक ज्ञान**
   पारंपरिक ज्ञान केवल अतीत की विरासत नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत और विकसित होती प्रणाली है जो सांस्कृतिक परंपराओं, आध्यात्मिक मूल्यों और पीढ़ियों के अनुभवों में निहित है। पर्वतीय समुदायों में यह ज्ञान पारिस्थितिक संरक्षण, सतत कृषि और वनों पर आधारित आजीविका का आधार है। DECODE पहल यह सिद्ध करती है कि ऐसे ज्ञान प्रणालियों को मान्यता देना जलवायु लचीलापन और अनुकूलनशीलता के निर्माण में अत्यंत आवश्यक है।

2. **ज्ञान का सह-निर्माण: प्रासंगिकता और प्रभाव को बढ़ाता है**
   ज्ञान का आदान-प्रदान एकतरफा नहीं होना चाहिए। DECODE का दृष्टिकोण वैज्ञानिक और सामुदायिक ज्ञान को समान आधार पर लाने का है। यह सह-निर्माण स्थानीय स्तर पर उपयुक्त, सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य और दीर्घकालिक समाधान तैयार करता है, जिन्हें समुदाय आसानी से अपनाते हैं।

3. **सतत विकास की धुरी के रूप में महिलाएं**
   पर्वतीय अर्थव्यवस्थाओं में महिलाएं केवल भागीदार नहीं, बल्कि परिवर्तन की सूत्रधार हैं। HARC जैसे सहकारिताओं में उनकी नेतृत्वकारी भूमिका ने आयवृद्धि, बेहतर स्वास्थ्य, मजबूत स्थानीय संस्थानों और सामाजिक मान्यता को बढ़ाया है। बीजों, वनों और खाद्य प्रणालियों की संरक्षक के रूप में उनकी पारंपरिक भूमिका उन्हें विशिष्ट पारिस्थितिक ज्ञान प्रदान करती है, जो संरक्षण और सततता के लिए अनिवार्य है।

4. **उपनिवेशवाद-मुक्त शोध के उपकरण के रूप में भागीदारी शोध**
   शोध को उपनिवेशवाद से मुक्त करने का अर्थ है कि समुदाय अपने मुद्दों को परिभाषित करें, अनुसंधान का नेतृत्व करें और उसके परिणामों पर अधिकार रखें। जब क्रियात्मक शोध भागीदारी सिद्धांतों पर आधारित होता है, तो यह शक्ति-संतुलन को बदलता है और पारस्परिक सीख को संभव बनाता है। डॉ. द्युतिमान चौधरी का प्रतिबिंब इस बात की पुष्टि करता है कि पारंपरिक ज्ञान और विज्ञान का समावेश समानता और सम्मान के साथ ही संभव है — थोप कर नहीं।

5. **संस्कृति-आधारित बाज़ार और नीति नवाचार**
   जब सांस्कृतिक ज्ञान को आधुनिक उपकरणों — जैसे प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन — के साथ जोड़ा जाता है, तो यह हाशिए पर रह रहे समुदायों के लिए नए आर्थिक अवसर उत्पन्न करता है।

चमोली में तुलसी और आंवला के मूल्य श्रृंखलाओं की सफलता दर्शाती है कि पारंपरिक फसलों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सशक्त कर आजीविका बढ़ाई जा सकती है, वह भी सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखते हुए।

6. **शोध की नैतिकता: प्रतिनिधित्व, सम्मान और पारस्परिकता**
   प्रो. पाउला बनर्जी द्वारा यह विशेष रूप से रेखांकित किया गया कि समुदायों के साथ किया गया शोध विनम्रता, सहानुभूति और नैतिक उत्तरदायित्व से युक्त होना चाहिए। अक्सर समुदायों को केवल "फील्ड साइट" के रूप में देखा जाता है, न कि भागीदारों के रूप में। शोधकर्ताओं को सुनिश्चित करना चाहिए कि शोध निष्कर्ष समुदायों के साथ साझा हों, योगदानों को मान्यता दी जाए और लाभ समान रूप से वितरित हों। इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधित्व केवल औपचारिक न होकर सशक्त और अर्थपूर्ण होना चाहिए — यदि महिलाएं केंद्र में हैं, तो वे ही कथानक को भी नेतृत्व दें और मंचों पर दृश्यमान हों।

7. **शोधकर्ता मार्गदर्शक बनें, उद्धारक नहीं**
   वेबिनार ने यह स्पष्ट किया कि समुदाय केवल ज्ञान के प्राप्तकर्ता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय वाहक हैं। शोधकर्ताओं को स्वयं को उद्धारकर्ता या विशेषज्ञ के रूप में नहीं, बल्कि समुदाय की आवाज़ों को मंच देने वाले मार्गदर्शकों के रूप में देखना चाहिए। सर्वोत्तम शोध वही होता है जो गहराई से सुनता है, अनुभवों का सम्मान करता है और जमीनी ज्ञान को नीतियों और व्यवहार में बदलने में मदद करता है — बिना उसे कमजोर किए या उस पर अधिकार जताए।

सारांश

DECODE परियोजना और इस वेबिनार में साझा की गई कहानियाँ हमें इस बात पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं कि ज्ञान कैसे उत्पन्न होता है, उसका मूल्यांकन कैसे किया जाता है, और उसका उपयोग किस प्रकार होता है। इस वेबिनार ने इस बात को रेखांकित किया कि ज्ञान प्रणालियों में मौजूद पदानुक्रमों को तोड़ना, महिलाओं और हाशिए पर मौजूद समुदायों की नेतृत्वकारी भूमिका को पहचानना, और एक ऐसा भविष्य सह-निर्मित करना आवश्यक है जो सतत, समावेशी और न्यायसंगत हो।

“फूड फ्रॉम फॉरेस्ट” वेबिनार ने पारंपरिक ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सतत विकास के बीच संतुलन स्थापित करने के प्रयासों को उजागर किया। इस संवाद मंच ने यह स्पष्ट किया कि पर्वतीय समुदायों की पारंपरिक जीवनशैली केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं है, बल्कि वह जलवायु अनुकूलन और आजीविका स्थिरता की आधारशिला भी है।

इस वेबिनार के अनुभव ने हमें यह सिखाया कि ज्ञान के निर्माण में समुदायों की भागीदारी आवश्यक है, और विशेषकर महिलाओं और हाशिए पर स्थित लोगों की नेतृत्व भूमिका को मान्यता देना सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

DECODE परियोजना ने यह दिखाया कि जब विज्ञान और परंपरा को समान स्तर पर रखकर सह-निर्माण की प्रक्रिया अपनाई जाती है, तो न केवल समाधानों की प्रासंगिकता बढ़ती है, बल्कि समुदायों की स्वायत्तता और गरिमा भी बनी रहती है।

इस आयोजन ने यह भी याद दिलाया कि शोधकर्ताओं की भूमिका "सहायकों" की होनी चाहिए—वे समुदायों की आवाज़ को बुलंद करने में सहयोग करें, न कि उनके अनुभवों पर अधिकार जमाएं।

यह वेबिनार सिर्फ तकनीकी सफलता नहीं थी, बल्कि यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक उपलब्धि भी थी, जिसमें एक दूरस्थ क्षेत्र की महिलाएं अपनी कहानियों को वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम हुईं। इसने यह संदेश दिया कि स्थानीय ज्ञान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विकास के विमर्श में उचित स्थान मिलना चाहिए।

केस स्टडी के लेखक

गौरी खन्ना, कार्मेन कोसलर, शैलेश पंवार, अंशुमान करोल
एवं HAKVBSS (अलकनंदा कृषिव्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारिता) की सहकारी महिला सदस्याएं

DECODE परियोजना टीम के लेखक

प्रो. बड हॉल, डॉ. राजेश टंडन

इस केस स्टडी में योगदान देने वाले सदस्य

1. **महेंद्र सिंह कुंवर** (मुख्य सलाहकार – HARC, देहरादून)
   शैलेश पंवार (मुख्य कार्यकारी – HARC, देहरादून)
2. **HARC – अलकनंदा कृषि व्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारिता (HAKVBSS)**
3. **गणेश उनियाल** (सचिव, HAKVBSS)
4. **रमेश नेगी** (कोषाध्यक्ष, HAKVBSS)
5. **सहकारी समिति की महिला सदस्याएं**-भवानी देवी, लीला देवी, रमा देवी, सुधा देवी, गुड्डी देवी, सोनी देवी, जया श्री, अनीता देवी, प्रमिला देवी, कुसुमा देवी, संगीता देवी, शकुंतला देवी, दीपा मैखुरी, आशा देवी, हेमा देवी, सुलेखा सती, उषा रावत, लक्ष्मी देवी, पुष्पा देवी, आशा नौटियाल, वंदना देवी, ममता खंडूरी, लक्ष्मी देवी, उषा देवी, ममता देवी, शशि देवी, जसमती देवी, विषंभरि देवी, कल्पना देवी, उषा देवी, देवेश्वरी देवी, पुष्पा देवी, पुष्पा देवी, दीपा देवी, पुष्पा देवी, नीमा देवी, मंदोदरी देवी, सरस्वती देवी, रमा देवी, कमला देवी, नौमी देवी, सरोजनी देवी, कमला देवी, सावित्री देवी, सावित्री देवी।

सामुदायिक साझेदार

- हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (HARC)
- अलकनंदा कृषिव्यवसाय बहुद्देशीय स्वायत्त सहकारिता (HAKVBSS)

- पार्टीसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (PRIA)

स्टोरी मैप का लिंक

https://storymaps.com/stories/2d17e008e8cf430484100662a3a22ee8 (English Version)

https://storymaps.com/stories/cf03f46b0ac942ef93b2c0ada3cc21a8 (Hindi Version)